जापान

भारती

अंक ७/८ विक्रम संवत् २०५२ सितम्बर/अक्तूबर

विश्वरूपस्य भार्यासि पद्मे पद्मालये शुभे ।
सर्वतः पाहि मां देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते।।

संपादक

सौरभ सिंघल

संपादक मंडल

अखिल मित्तल

रंजन गुप्त (रंजन गुप्त)

रंजन कुमार

सुशील कुमार जैन

पता

5-12-9 दाईसान एबातो बिल्डिंग,
उएनो ताइतो कू ,
तोक्यो 112

फोन/फैक्स

03-3832-1631/
03-3832-1641

फोन/ई-मेल

सौरभ : 03-3462-0853
singals@ml.com

रंजन कुमार : 03-3473-6043
ranjan@twics.com

जापान भारती का यह सातवां अंक, संयुक्तांक है। अपरिहार्य कारणों से सितम्बर का अंक समय पर न निकाल पाने के लिए हम पाठकों से क्षमा याचना करना चाहेंगे ।

इस अंक में ओसाका विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक **प्रोफेसर तोमिओ मिज़ोकामी** की रचना पाकर जापान भारती धन्य हुई । १५ सितम्बर को भारत में हिन्दी दिवस मनाने की परम्परा है, उस सन्दर्भ में कुछ विशेष सामग्री हम प्रकाशित कर रहे हैं।

हम अपने इस प्रयास में कहाँ तक सफल या असफल रहे हैं इसकी कसौटी तो पाठकों के हाथ में है। यदि पाठकगण कुछ पल *जापान भारती* के लिए निकालेंगे तो हमारा उत्साह बढ़ेगा ।

हमारी एक और अपेक्षा रचनाओं की भी है । आप सबसे, विशेषकर हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन से जुड़े जापानी महानुभावों से हम एक बार फिर आग्रह सहित अनुरोध करना चाहेंगे कि आपके रचनात्मक सहयोग के बिना *जापान भारती* अधूरी है । आपकी कविता,कहानी, निबन्ध, संस्मरण या अन्य किसी भी प्रकार की रचना की हम बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

<u>इस बीच जापान भारती का पता बदल गया है ,पाठकगण अब नए पते पर पत्र व्यवहार करें।</u>

जापान भारती श्रीमती प्रिया टिपणिस और श्रीमती मीरा बनर्जी सहित उन सभी साथियों की ऋणी है जो पत्रिका पाठकों तक पहुँचाने में निरन्तर हाथ बंटा रहे हैं ।

दीपोत्सव एवम् श्री महावीर निर्वाण दिवस पर जापान भारती परिवार की ओर से मंगलकामनाएं स्वीकार करें ।

सौरभ सिंघल

प्रिय सौरभ जी,

मुझे *'जापान भारती'* के नियमित प्रकाशन से बड़ी खुशी है । हमारी मुलाकात सरस्वती पूजा के समारोह में हुई थी । तब से अब तक इस पत्रिका को अपने छठे अंक में प्रवेश करते हुए देखना बड़ा सुखद संयोग है । कृपया मेरा नाम भी अपने पतों की सूची में सम्मिलित कर लें । बधाइयों और शुभकामनाओं सहित.

किशोर भट्टाचार्जी, साइतामा केन, जापान

'जापान भारती' का नया अंक आप सब की प्रशंसनीय टीम भावना का परिणाम है । मुझे सब लोगों से सदा *'जापान भारती'* के बारे में प्रशंसा सुनने को मिलती है और अपने समुदाय के इस प्रयास से बड़े संतोष और गौरव का अनुभव होता है। ***मैं पाठकों को दीपावली के समारोह के बारे में सूचित करना चाहूँगा । यह समारोह सेंट मेरीज़ इंटरनेशनल स्कूल के हॉल में २८ अक्तूबर को शाम के चार बजे आरंभ होगा ।*** बिशन शर्मा जी *ICAT* के पुराने सदस्य रहे हैं, *जापान भारती* में उनकी कृतियों को पा कर बड़ी खुशी होती है। दो साल पहले उन्होंने भारतीय दूतावास में सुलेख की बड़ी अच्छी सी प्रदर्शनी भी लगाई थी । आप सब को फिर से बधाई एवं मंगलकामनाएं ।।

ए. पी. एस. मणि, तोक्यो

'जापान भारती' का चौथा अंक मुझे मिला जिसमे मेरी दो रचनाएं शामिल हैं । बहुत बहुत शुक्रिया । सावन के महीने में नवपरिणीता मराठी नारी सोलह प्रकार की पत्तियां अर्पण करके पार्वती माँ की पूजा करती हैं । इत्तेफाक से *'जापान भारती'* का सावन के महीने का अंक सोलह पन्ने का है ।

निर्दोष मुद्रण और उच्च श्रेणी के कागज से विभूषित *'जापान भारती'* में मराठी को स्थान देकर आपने मेरी मातृभाषा का सम्मान किया है। धन्यवाद ।

आपको और संपादक मंडल को निःसंशय सफलता मिलेगी । सभी भारतीय भाषाओं की शुभकामनाएं आपके साथ रहेगी । भविष्य में *'जापान भारती'* द्वारा भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का परिचय पाठक को हो जाएगा, ऐसी आशा रखती हूँ । आपकी शुभचिंतक ,

पुष्पा मेढेकर, ठाणे

दिवाली के शुभ अवसर पर आपको तथा जापान भारती के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ । दिवाली पर एक रचना भेज रहा हूँ। स्वीकार करें।

अशोक रावत,योकोहामा, (अशोक भाई रचना के लिए धन्यवाद,किन्तु कुछ देर से मिलने के कारण प्रकाशित न कर पाने के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।)

दीपावली के पर्व पर ***जापान भारती*** के दिनोंदिन निखार की कामना करता हूँ। आप महानुभावों का यह अनुकरणीय प्रयास जापान के भारतीय दिलों में रम जाए ऐसी कामना है।

नरेश मुकुर सिंह,योकोहामा

जापान भारती के सभी अंक अपनी निराली छटा के साथ मिले। जापान में रह कर भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी माटी से जुड़ने का यह अनमोल सुअवसर प्रदान करने के लिए बधाई। पत्रिका उत्तरोत्तर उन्नति करे यही कामना है।

डा. उमेश पवनकर,तोक्यो

इस अंक में

हमारा पन्ना 2
आपका पन्ना 3
ज्योति पर्व 4
मुसीबत का साथी...5

काव्यधारा- 6
मेरे कब थे राम
रोशनी 7
काश 7

सन्दर्भ-हिन्दी दिवस--
हिन्दी दिवस
का अर्थ 8
जापान में हिन्दी
शिक्षण 8
इन्डियन-जापानीज़
भाई-भाई ...9
जैन कथा 13
गुरु दक्षिणा 14

निवेदन 18

चिठ्ठिपत्र 18

आपनजन 19

वामेर इच्छा 19

आलापचारी शिवराम .20

ज्योतिपर्व - दीपावली

दीपोत्सव या दीपावली भारतवर्ष के चार प्रमुख पर्वों में से एक है। शरद ऋतु का आगमन पर जैसे नीला आकाश,निर्मल जल और शीतल पवन सबको मोहित कर देते हैं उसी प्रकार दीपावली का आगमन घर–घर में नई उमंग भर देता है।

दीपावली में दो शब्दों का संगम है– दीप और अवलि। अवलि का अर्थ है–पंक्ति। इसलिए दीपावली का अर्थ हुआ–दीपों की पंक्ति। कार्तिक मास में अमावस्या की रात वर्ष की सबसे काली रात होती है। छोटे–छोटे दीपों की जगमगाता प्रकाश हर घर, दुकान,अट्टालिका को इस गहन अंधकार से मुक्त कर आलोकित कर देता है।

दीपावली अनेक पर्वों की लड़ी से सुशोभित है। दो पर्व इसके ठीक पहले और दो एकदम बाद आते हैं। दीपावली अनुष्ठान का प्रथम पर्व है–धनतेरस। इसमें धन शब्द देवताओं के वैद्य धन्वन्तरि से लिया गया है और तेरस तो कार्तिक मास का तेरहवीं तिथि त्रयोदशी है। धनतेरस पर स्वास्थ्य की कामना से घर–आंगन की सफाई और समृद्धि की कामना से नया बरतन खरीदने की परम्परा है। इसके अगले दिन नरक चतुर्दशी गंदगी रूपी नरक से मुक्ति पाने का दिन है। वैसे एक प्राचीन मान्यता के अनुसार इसी दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर राक्षस का वध किया था। इस दिन तक घर को झाड़–बुहार कर,लक्ष्मी के स्वागत हेतु सजा– संवार लिया जाता है।

इस प्रकार सजे–संवरे घरों में कार्तिक अमावस्या का दिन सुख–समृद्धि की देवी,विष्णु प्रिया लक्ष्मी के आगमन का संदेश लिए आता है। दिन–भर दीपावली पूजन की तैयारी,नए वस्त्रों,मिठाई,भेंट–उपहारों के आदान–प्रदान में बीत जाता है। साँझ ढलते ही घर–आंगन, द्वार–दुकान का हर कोना दीपमालिकाओं से जगमगा उठता है। उसके बाद सपरिवार सुख–समृद्धि और बुद्धि बल की कामना से लक्ष्मी–गणेश पूजन की परम्परा भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही है।

धन–ऐश्वर्य की देवी लक्ष्मी के साथ शिवपुत्र,ज्ञान और बुद्धि के भंडार गणेश की पूजा का विधान यही सिखाता है कि *बुद्धि बिना धन नाहीं*। लक्ष्मी आगमन की प्रतीक्षा में रात–भर दीपक प्रज्जवलित रखने की परम्परा भी है। आनन्द और उल्लास की अभिव्यक्ति आतिशबाज़ी से होती है। व्यवसायी वर्ग दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजन के बाद नए बही–खाते शुरू करता है।

दीपावली पर्व के साथ भी अनेक कथाएं जुड़ी है। विक्रमी संवत् के प्रवर्तक राजा विक्रमादित्य का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ बताया जाता है। एक मान्यता यह भी है कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने चौदह वर्ष का वनवास पूर्ण कर कार्तिक अमावस्या के दिन ही अयोध्या लौट कर राजसिंहासन ग्रहण किया था।

दीपावली के अगले दिन अन्नकूट या गोपर्धन पूजा का विधान है। कहते हैं कि एक बार देवराज इन्द्र ब्रजवासियों पर कुपित हो गए। घनघोर वर्षा ने जल–थल एक कर दिया। तब श्रीकृष्ण ने अपनी अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर ब्रजभूमि की रक्षा की ।

उसके बाद कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को भाईदूज का मंगलपर्व भाई–बहन के पावन प्रेम का प्रतीक है। बहनें अपने भाइयों के सुखद भविष्य की कामना मन में लिए उनका तिलक–पूजन करती हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन यमुना अपने भाई यम से मिलने गई थी। इसीलिए इसे यमद्वितीया भी कहा जाता है।

वास्तव में दीपावली का यह सम्पूर्ण अनुष्ठान अंधेरे पर उजाले,असत्य पर सत्य, अज्ञान पर ज्ञान और बुराई पर अच्छाई का प्रतीक है।

सुख–समृद्धि , यश–ऐश्वर्य से परिपूर्ण यह ज्योतिपर्व सर्वत्र मंगलमय हो !

-डा. शशि तिवारी,
नई दिल्ली

मुसीबत का साथी

-मिवाको कोएत्सुका -

जब भूकंप अचानक ही उन्हें यह बोध करा देता है कि उनकी आयु अड़तीस साल न हो कर कम से कम पाँच हज़ार वर्ष है, तो तत्काल ही समझ में आ जाता है कि भूकंप के भयानक रूप ने कितनी ही ज़बरदस्त दहशत पैदा कर दी होगी ।

अरण्य विचरण का सुख कहाँ त्राहि-त्राहि करने के सिवा और आता ही नहीं, यही मेरी अवस्था थी। ***जापान भारती*** के अंक ५ में व्यंग्य के तौर पर प्रोफेसर हरजेन्द्र चौधरी जी की ज़बरदस्त कलम ने भ्रम के डाँवा-डोल में डाल दिया कि कहाँ स्वप्न भंग की दरार पड़ी हुई होगी। लेख की तेज धार मेरे मुँह पर अश्रु-धारा का वार कर गई । सचमुच उस भूकंप ने उनके तन-मन को कितनी निर्दयता से झकझोरा होगा और यही मेरी स्थिति थी फिर भी आदमी के पास भाषा का माध्यम रहता है । किसी हद तक बात करते करते दहशत को दूर नहीं तो कम किया जा सकता है । लेकिन अनेकों अकेले आदमियों के जीवन साथी, कुत्तों और बिल्लियों पर क्या गुज़री होगी ?

प्रभावित क्षेत्र के नेत्रहीनों के साथी कुत्ते, जो ध्वनि में ज़रा सा भेद पहचान कर मालिक की रक्षा करते हैं, अगुवाई करते हैं । नेत्रहीनों के ये कुत्ते बड़ी संख्या में १७ जनवरी के बाद बाहर जाने से कतराने लगे हैं। हाल ही में ये आँकड़े मिले हैं कि महाविनाशकारी हानकिन भूकंप के बाद कोबे में जीवन बचाकर रहने वाले आधे से ज्यादा कुत्ते और बिल्ली कभी कभार अजीब हरकतें करने लगते हैं। आधे से ज्यादा को कभी खाने की इच्छा नहीं होती ।

हानशिन भूकंप के बारे में तो काफी कुछ लिखा गया है। यहाँ **मिवाको जी** की प्रस्तुति है एक दिल को छू लेने वाला पक्ष दूसरे चहेतों के बारे में ....

जापान में पालतू जानवरों में कुत्ते और बिल्ली सर्वाधिक संख्या में हैं। कुत्ता तो आदमी का पुराना से पुराना साथी है । पता चला है कि उस भूकंप के बाद अनेक कुत्तों के पेट में फोड़ा पड़ा पाया गया ।

कुछ कुछ स्वयंसेवी लोगों ने कुत्तों और बिल्लियों के लिए भी शरण स्थल बनवा रखे हैं। उन्हें खाना देने के साथ साथ बाहर घूमने भी ले जाया जाता है। मालिक से वंचित कुत्ते बिल्लियों के लिए नये मालिकों को ढूँढने का काम भी जारी है ।

एक कोबेवासी माहिला तीन महीने तक अपने प्यारे कुत्ते से अलग रहने के बाद कोबे से काफी दूर अपने माएके में उस कुत्ते के साथ फिर से रहने लगी हैं। उन्हें सुबह शाम कुत्ते के साथ बाहर घूमने में बड़ा आनंद मिलता है ।

उनके लिए नए पड़ोसी कभी यह व्यंग्य कसते हैं कि भूकंप से प्रभावित होते हुए भी आपका कितने आराम का जीवन चल रहा है। कुत्ते के साथ घूमने जाती हैं । पड़ोसी का यह कहना होगा कि आदमी मुसीबत में है और जानवरों की सेवा के लिए समय निकाला जा रहा है । मगर कुत्तों का भी जीवन है, उनकी भी अनकही बातें होती हैं। उन महिला को कुछ बुरा भी लगता है क्योंकि कि वे मुस्कुरा कर इतना भर कह देती हैं : यह कुत्ता हमारे परिवार का अभिन्न अंग बन चुका है।

कुत्ता आदमियों का पहले नम्बर का पालतू जानवर रहा है । एक जापानी लोक कथा में कुत्ता नेक दिल वाले बूढ़े बाबा के लिए मरने के बाद भी उन के जीवन को आनंदमय बनाने की कोशिश कर जाता है ।

पहले तो उसने भौंक कर जताया कि इस जगह खोदने पर कुछ रुपये मिल जायेंगे । पड़ोसी लालच का शिकार हो कर उस कुत्ते को घसीट कर गए । और वह कुत्ता कूड़ा-करकट ही खुदवा सका । बुरे दिल वाले पड़ोसी ने गुस्से में आकर उसे मार डाला । अंततः कुत्ता राख बन गया। नेक दिल वाले बूढ़े बाबा वह राख ले गये ।

मुरझाए हुये पेड़ों पर जब उन्होंने वह राख बिखेर दी तो देखते ही देखते सभी पेड़ों पर फूल ही फूल खिल उठे।

पत्नी के प्रश्न पति के नाम

मेरे कब थे राम !

राम!
जब तुम आए थे
मेरी नगरी में,
रहा होगा अनुराग
तुम्हारी दृष्टि में
किन्तु धनुष भंग किया
तो गुरु की स्वीकृति से।
अयोध्या ले आए ।
कैकेयी माँ का आदेश
छोड़ा राजपाट,
तत्पर वनगमन को।
मेरा कब किया विचार ?
मेरे आँसुओं,
मेरी विह्वलता
ने किया विवश
तुम्हें.....
मुझे संग ले चलने
को।
वन में रहे हम
दुष्ट की दृष्टि पड़ी
मुझ पर
किया तुमने युद्ध
पापी....
के उद्धार हेतु।
मुझे ले आए
फिर....
अग्नि परीक्षा
जग के लिए
या अपने लिए?
क्या मालूम...।
मानो.....
जो न बचा होता
सत्व मेरा?
तो क्या मैं
अपराधिन थी?
तब क्या
निर्णय लेते तुम?
खैर छोड़ो!
महल ले आए
हुआ गर्भधारण
धोबी का लगा आक्षेप
मुझे त्यागा
राज निभाने को।
फिर आँसू लिए
बहुत बिलखे
होंगे तुम!
कदाचित् बहुत
बँधे थे मुझ से
किन्तु....
राज से अधिक नहीं ।
राज नहीं
त्यागा तुमने
मैं संवेदनहीन
वस्तु थी केवल
त्याग किया मेरा।
पुरुष बनता है रक्षक।
अपनी पत्नी को....
न बचा सका।
राज आवश्यक था....
राज करने को
बहुत मिल जाते
लेकिन मुझे कब
अन्य रक्षक मिला?
मेरा दिल....
जो बिखरा
तो कब सम्भल सका?
राम!
तुमने जो किया
अन्यों की खातिर
मेरे लिए कब क्या
किया?

–सुनीता शर्मा

(पत्नी के नाते सीता के मन की व्यथा को अभिव्यक्त करती यह कविता वास्तव में नारी मन की कसक का प्रतिबिम्ब है। नवभारत टाइम्स से साभार)

रोशनी है

चुप्पी है,
अन्धेरा है,
ग़मज़दगी है
सुना तुमने ?
हवा ने सरसरा कर
पत्तियों से कुछ
कहा,
जैसे इस सन्नाटे को
तोड़ने की
कोशिश कर रही हो

जुगनू को देखो -
अन्धेरे को
चीरने के प्रयास में
खुद को
जला रहे हैं
और मैं,
जीवन की पीड़ा
उठाए भी
कुछ भारहीन सा हूँ ।

आँखें बन्द कर देखो -
इस वीराने में
जो उपस्थित है
उसे
महसूस कर सकते हो
तुम ?

ध्यान दो,
सन्नाटे से
जो संगीत
उठ रहा है,
कानों तक
पहुँच रहा है तुम्हारे ?

हाँ, सच,
दीये पर से ध्यान उठा,
रोशनी पर

गौर करो -
यहाँ हम,
तुम,
यह,
वह,
सारे निरर्थक शब्द हैं

कई सूत हैं
पर,
बस एक
सफ़ेद चादर है,
अथाह है,
व्यापक है,
अभेद्य है,
पहेली है
सुर भी है,
सामन्जस्य भी ।

काश

तुम यूँ न मुस्कुराते
तो अच्छा होता
मुझको यूँ न तड़पाते
तो अच्छा होता

जबसे तुम्हें देखा है,
ये अफ़साना हो गया
खुद से नाता तोड़
मैं दीवाना हो गया

तेरे नैन यूँ न टिमटिमाते
तो अच्छा होता
मुझको यूँ न तड़पाते
तो अच्छा होता

हिरणी सी आँखों में तेरी,
चरल, चपल, चंचलता
इनमें जो डूबा,
दुनिया से बेगाना हो गया

तेरे जुल्फ यूँ न लहराते
तो अच्छा होता
मुझको यूँ न तड़पाते
तो अच्छा होता

घनघोर घटाओं से
तेरा प्यार
जो बरसे
इनमें खो जाने का
बस एक
बहाना हो गया

तुम मेरे ख्वाबों में न आते
तो अच्छा होता
मुझको यूँ न तड़पाते
तो अच्छा होता

यूँ तो शहर में हैं
अदाएं और भी
पर तेरे तीर का
मैं निशाना
हो गया

सुयोध कुमार 'नीरज',
चैपेल हिल,
नॉर्थ कैरोलाइना, अमरीका

जापान भारती नया पता-
5-12-9,
दाईसान एबातो बिल्डिंग,
उएनो ताइतो कू,
तोक्यो- 112

हिन्दी - दिवस का अर्थ

राष्ट्र के विकास - विस्तार के साथ भाषा का विकास- विस्तार सहज भाव से जुड़ा हुआ है । भाषा राष्ट्र की समृद्धि की पहचान का सर्वाधिक सशक्त माध्यम है । हमारे देश को स्वतंत्र हुए ४७ वर्ष हो चुके हैं । हर क्षेत्र में प्रगति करने वाला हमारा देश अपनी राष्ट्र भाषा के विकास में पर्याप्त प्रगति नहीं कर पाया जबकि राष्ट्र में भाषा का स्थान सर्वोपरि होता है । इस देश की अभिव्यक्ति-शक्ति जन-जन की वाणी कल्याणी हिन्दी है ।

हिन्दी उस भाषा का नाम है जिसकी लिपि देवनागरी है। यह हिन्दी पिछले एक हज़ार वर्ष से भारत के कोने-कोने में राष्ट्रीय आत्मा का स्वर गुंजरित कर रही है । इस राष्ट्रभाषा हिन्दी को राजभाषा का गौरव-पद मिला १४ सितम्बर १९४९ को जिस दिन स्वतंत्र भारत की संविधान सभा द्वारा संविधान के भाग-१७ अनुच्छेद ३४३ (१) के अन्तर्गत सर्व-सम्मति से यह धारा जोड़ी गयी - *भारत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी ।*

तभी से प्रति वर्ष १४ सितम्बर का दिन हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है । इस संदर्भ में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का कथन उल्लेखनीय है - *आज पहली बार हम अपने संविधान में एक भाषा स्वीकार कर रहे हैं जो भारत संघ के प्रशासन की भाषा होगी और जिसे समय के अनुसार अपने आप को ढालना और विकसित करना होगा ।*

वस्तुतः हिन्दी - दिवस राष्ट्र की मानसिक स्वाधीनता का निष्ठा पर्व है । अन्ततः भारत के सुप्रसिद्ध मनीषी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में कहा जा सकता है - *आधुनिक भारत की संस्कृति एक विकसित शतदल कमल के समान है जिसका एक-एक दल एक-एक प्रान्तीय भाषा और उसकी संस्कृति है ... हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रान्तीय बोलियाँ जिनमें सुन्दर साहित्य - सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर (प्रान्त) में रानी बनकर रहें ... और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिन्दी भारत-भारती हो कर विराजती रहे ।*

-डा. सरला चौधरी, नई दिल्ली

जापान में हिंदी शिक्षण

जापान में हिंदी (या संस्कृत, बंगला, पंजाबी, मराठी,तमिल,मलयालम आदि अन्य भारतीय भाषाएं) सीखने की प्रेरणा का मूल स्रोत भारतीय संस्कृति तथा बौद्ध धर्म के प्रति जापानी लोगों की जिज्ञासा है । वैसे यहाँ हिंदुस्तानी यानी उर्दू तथा तमिल भाषा की पढ़ाई पहले–पहल १६०८ में शुरु हुई। हिंदुस्तानी–उर्दू का शिक्षण तभी से जारी है ।

भारत की स्वाधीनता के पश्चात् १६४६–५० में देवनागरी हिंदी शिक्षण का भी श्रीगणेश हुआ । इस समय जापान में दो सरकारी विश्वविद्यालयों –तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय तथा ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय–के अलावा और भी अनेक संस्थाओं में हिंदी का अध्ययन–अध्यापन किया जा रहा है ।

जापान के लोग जहाँ अपनी भाषा के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं वहीं विश्व की दूसरी भाषाओं को जानने-सीखने में इनकी रुचि भी अनुकरणीय है । अंग्रेज़ी और दूसरी युरोपीय भाषाओं के साथ-साथ भारतीय भाषाएं सीखने का रुझान भी बहुत दिखाई देता है । इसी संदर्भ में जापान में हिंदी शिक्षण की स्थिति का आकलन कर रहे हैं - ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में हिंदी के आमंत्रित प्राध्यापक -

प्रोफ़ेसर हरजेन्द्र चौधरी

तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय मूल रूप से एक महाविद्यालय के रूप में १६०८ में अस्तित्व में आया । उसके तेरह साल बाद १६२१ में ओसाका विदेशी भाषा महाविद्यालय की स्थापना हुई । १६४६ में इन दोनों महाविद्यालयों को विश्वविद्यालय का रूप दिया गया ।

इन्हें शिक्षा मंत्रलय से, १६५७ में, हिंदी तथा उर्दू को अलग–अलग भाषाओं के रूप में पढ़ाने की अनुमति मिल गई तथा १६५६ से हिंदी और उर्दू के लिए विद्यार्थियों को अलग–अलग प्रवेश दिया जाने लगा। १६६८ में हिंदी तथा उर्दू के लिए अलग–अलग विभाग भी गठित हो गए । १६५० के बाद लगभग डेढ़ दशक के अंतराल मे हिंदी के शिक्षकों तथा हिंदी के लिए पुस्तकों का अभाव निरंतर बना रहा ।

अनेक कठिनाइयों और असुविधाओं के बावजूद जापान के अनेक भारत प्रेमी और हिंदी प्रेमी विद्वानों–अध्येताओं–प्राध्यापकों के भगीरथ प्रयासों के फलस्वरूप हिंदी भाषा की विकास–धारा और शिक्षण–धारा और अधिक गतिशील होती चली गई। सातवें दशक के अंत तक आते–आते हिंदी के अध्येताओं की संख्या और उनके काम की गुणवत्ता में अभूतपूर्व होने लगी जो आज तक निरन्तर जारी है ।

इस समय तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में लगभग अस्सी विद्यार्थी हिंदी सीख रहे हैं तथा ओसाका विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में हिंदी के छात्रें की संख्या लगभग सवा सौ है । दोनों विश्वविद्यालयों में हिंदी में एम.ए. तक की पढ़ाई तो वर्षों से हो ही रही है, तोक्यो विदेशी भाषा विश्वविद्यालय में पिछले दो वर्ष से हिंदी में पी.एच.डी. शोधकार्य भी प्रारम्भ हो चुका है । इन दोनों सरकारी विश्वविद्यालयों के साथ–साथ अनेक गैर–सरकारी व निजी शिक्षणालयों में भी हिंदी–शिक्षण की सुविधाएं मौजूद हैं । उदाहरण के तौर पर हिरोशिमा विश्वविद्यालय, क्योतो स्थित ओतानी विश्वविद्यालय तथा ओसाका स्थित ओतेमोन गाकुइन विश्वविद्यालय जैसी संस्थाओं का ज़िक्र किया जा सकता है।

हिंदी भाषा सीखने के साथ–साथ अनेक विद्यार्थी भारतीय संगीत व नृत्य भी सीखते हैं । प्रति वर्ष अनेक विद्यार्थी भारत यात्र करते हैं तथा कुछ विद्यार्थी भारत की विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में विभिन्न स्तरों के हिंदी पाठ्यक्रम पूरे करने के लिए भारत जाते हैं । भाषा–शिक्षण का यह सिलसिला दोनों देशों के पारम्परिक रिश्तों को और अधिक मज़बूत बनाता जा रहा है । भारत में हिंदी की स्थिति को लेकर हम बेशक शर्मिंदा हैं , लेकिन जापान में हिंदी की स्थिति और उसके उज्जवल भविष्य के प्रति आश्वस्त होने के अनेक कारण और आधार मौजूद हैं ।

इस लेख के लिए आधारभूत सूचनाएँ प्रदान करने में प्रोफेसर तानाका, प्रोफेसर कोगा तथा श्रीमती मिवाको कोएज़ुका ने उदारता पूर्वक जो सहयोग उसके लिए लेखक और जापान भारती हृदय से आभारी हैं ।

●●●●

इन्डियन-जैपनीज़ भाई भाई

अकिरा ताकाहाशि

भारत-जापान मैत्री संघ के एक मुख्य सदस्य विश्वनाथ शुक्ल जी (बी.ए., एम.ए., पी.एच.डी., और ना जाने क्या ए.बी.सी.) पिछले दिन जापान पधारे थे। उनके स्वागत के लिए संघ के जापानी सदस्यों के द्वारा एक समारोह आयोजित किया गया। उस समारोह में एक जापानी लड़का भी शामिल था। उसने अपने बारे में बताया कि किसी विश्वविद्यालय में हिन्दी पढ़ता हूं, और शुक्ल जी के दर्शन पाकर बात करना चाहता हूं। संघ के साथ उसका कोई सम्बन्ध नहीं था, लेकिन शुक्ल जी इनकार करने वाले नहीं थे।

छ. : नमस्कार।

शु. : आइए। आइए। बैठिए। आई अम वेरी ग्लैड टू सी यू। यह बहुत खुशी की बात है कि यू आर स्टडिंग हिन्दी लैन्गिवज। वेरी गुड।

छ. : जापान-भारती की मैत्री के लिए जो सेवा आप करते आये हैं, उसके लिए मैं भी अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूं।

शु. : कहाँ की सेवा ? आई अम डूइन्ग ओन्लि फोर माई ज्योई। लेकिन, हाँ, सेवा, आपने ठीक ही कहा। आई हैव बीन वर्किंग फोर द फ्रेन्डशिप बिट्वीन इन्डिया एण्ड जापान फोर मोर दैन थार्टि इयार्ज।

यह कपोल-कल्पित वार्तालाप तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन के अवसर पर लिखा गया था। लेखक के अनुसार इस वार्तालाप का अभिप्राय भारतीय जीवन-दर्शन या संस्कृति पर आक्षेप करना नहीं है वरन् हिन्दी की आज की स्थिति पर व्यंग्य करना है। ज्वालामुखी में पूर्व-प्रकाशित इस रचना को हम लेखक एवं प्रकाशक की विशेष अनुमति के साथ *जापान भारती* में साभार प्रकाशित कर रहे हैं ।

छ. : क्षमा कीजिएगा। मैं ठीक-ठाक अंग्रेजी समझ नहीं सकता हूं। यदि आपत्ति न हो, और हैं भी आप हिन्दी भाषी प्रदेश के, कृपा करके हिन्दी में बोलियेगा।

शु. : यस, नो प्रोब्लेम। अच्छा, आप इन्गिलश नहीं समझते हैं?

छ. : जी हाँ। मैं जापानी हूं। अंग्रेज नहीं।

शु. : सो तो सही। हूं। अच्छा यह बताओ कि तुम हिन्दी क्यों सीखते हो? हिन्दी सीखने में रुचि कैसे हुई ? भारत के प्रति क्यों इतना लगाव है कि हिन्दी सीखी ?

सन्दर्भ : हिन्दी दिवस

छ. : आपने एक साथ तीन प्रश्न किये हैं। हिन्दी सीखने से पहले एक दिन मुझे भारतीय संस्कृति पर लिखी गई एक किताब मिली, जिसमें-

शु. : अच्छा, तुमने राधाकृष्णन् जी की पुस्तक पढ़ी है ?

छ. : जी नहीं, नाम तो अवश्य सुना है, लेकिन-

शु. : अवश्य पढ़ो। बहुत ही अच्छी पुस्तक है। इंडियन सिविलाइजेशन हैज मेइन्टेइन्ड इट्स कोन्टिन्यूइटी विच कान्ट बी सीन इन एनि अदर सिविलाइजेशनज् ओफ द वर्ल्ड। कोन्टिन्यूइटी, समझते हो ? एक अविच्छिन्न विचार-धारा। ग्रीस और रोम को देखो। आई नो दैट देअर सिविलाइजेशन कान्ट बी कोम्पेअरड विद अवर इन्डियन सिविलाइजेशन इन मेनी पोइन्टस एण्ड इन सम पोइन्टस दे आर स्यूपिरियर टू अस, टू डु देम जस्टिस। लेकिन आज उसे देखने के लिए तुम्हें म्यूजियम में जाना पड़ेगा। इन अदर वार्डज, उनकी संस्कृति और सभ्यता अब नष्ट हो चुकी है। म्यूजियम में मूर्तियाँ बनकर ही रह गई है।

छ. : मेरे विचार में जो चीजें आज संग्रहालय में ही होनी चाहिये, वे अब भी भारत में सड़कों पर दिखाई देती हैं।

शु. : मतलब ?

छ. : भूख, भिखारी , जाति-व्यवस्था, दास-प्रथा वगैरह।

शु. : अच्छा, यू आर टू पेसिमिसटिक, है न ? मैं तुम्हें समझा देता हूं। वर्ण-व्यवस्था का अपना बहुत पुराना इतिहास है। इट्स एन इनटिग्रल पार्ट ऑफ अवर कल्चर।

छ. : आप या तो हिन्दी में बात कीजियेगा या तो बिलकुल अंग्रजी में। मिला के बोलने से दोनों भाषाएँ बिगड़ जाती हैं।

शु. : ऐ ? अंग्रेजी में मैं कब बोला। आई अम स्पीकिन्ग ओन्लि इन हिन्दी।

छ. : अच्छा, तो अंग्रेजी में बोलियेगा।

शु. : नहीं, नहीं। तुम तो अंग्रेजी नहीं समझते हो। हाँ, मैं यह कहने वाला था। जब आर्य लोग भारत में आये, तब उन्हें समाज में कोई ठोस, कोई फर्मथीअरि की आवश्यकता सूझी, जिससे समाज व्यवस्थित रहे। हमारे पूर्वजों ने यह अच्छा तरीका इन्वेन्ट किया है, वह है वर्ण-व्यवस्था जिसमें समाज अनावश्यक स्ट्रगल से बच पाया ! समझे ? अच्छा। आई शो यू वन एक्सलेन्ट इगजाम्पल। न्यूयार्क में एक दिन रात को बिजली पांच घण्टों के लिये चली गई। ओन्लि फाइव आउअज। सोचो। इस बीच कितने क्राइम हुए। मर्डर, चोरी, आगजनी। बहुत। यही अमरीकी संस्कृति है जो द स्ट्रगल फोर दि इग्जिस्टेन्स पर आधारित है।

छ. : लेकिन किसी देश में तो बिजली चमकती रहने पर भी ऐसी गड़बड़ होती है।

शु. : होगी ! अच्छा, तुम ने भूख की बात कही। अब यह भी समझा देता हूं। आदमी बिना खाना खाये जी नहीं सकता है। आई अडमिट अज मच। बट दिस इज ओल्सो टू दैट मैन शैल नोट लिव बाई ब्रेड अलोन।

छ. : जरा मेरी बात भी सुनियेगा।

शु. : हाँ, हाँ, क्यों नहीं। क्या कहना चाहते हो ? कहो। कहो।

छ. : संस्कृति जो आप कहते हैं, वह-

शु. : अच्छा, तुम ने मेरी बात अभी समझी नहीं। सुनो। बताता हूं। अमरीका में-

छ. : जरा-

शु. : भई, तुम मेरी बात पूरी होने दो। बीच में दूसरों की बात काटना अच्छा नहीं है।

छ. : जी, सचमुच। कितना बुरा लगता है, आप ही ने मुझे सिखाया है आज।

शु. : कोई बात नहीं। इस तरह सीखते जाओ। यू आर अ यन्ग मैन जो अब नहीं सीखोगे, तो आखिर कब सीखोगे। मैं यह बता रहा था। अमरीका में अगर आदमी दो दफा खाना ठीक नहीं खा सके तो वो क्या करेगा। हत्या करेगा, चोरी करेगा,सब कुछ करेगा। लेकिन इण्डिया में खाना मिले, न मिले आदमी अपने धर्म अपनी संस्कृति को छोड़ेगा नहीं।

छ. : जहाँ दो दफा खाना नहीं मिलता, वहाँ संस्कृति होती है? अगर होती तो भी इससे क्या लाभ ?

शु. : लाभ केवल पैसे का नहीं, लाभ केवल खाने का नहीं। अच्छा, मैं एक बहुत अच्छे आदमी से तुम्हारा परिचय करा दूँगा, जो वित्त मंत्री जी के चाचा जी के मामा जी के साला जी लगते हैं। बहुत बड़े स्कालर हैं, तुम्हें अच्छी तरह से समझा देंगे।

छ. : वे साला जी आपके कौन लगते हैं ?

शु. : मित्र हैं। और तुमने शिवप्रसाद जी का नाम तो सुना होगा, जिनकी पहुँच बहुत बड़े-बड़े आदमियों तक है। वे मेरा कहा टाल नहीं सकते हैं। उनसे भी तुम्हारी बात करूँगा।

छ. : वे किसके साला जी हैं ?

शु. : सब के। मतलब सब लोग उनका आदर करते हैं। वे तुम्हारी मदद खूब करेंगे।

छ. : आपकी मेहरबानी है।

शु. : कोई बात नहीं। और कोई भी मदद तुम मुझसे चाहते हो, तो कहना। संकोच मत करो। मुख्यमंत्री तक मुझसे सलाह लेते हैं। थोड़े दिन पहले भी सुबह सुबह उनका टेलिफोन आया था। वे बहुत चिंतित थे। जानते हो, क्यों ? वे कहते थे कि इस साल प्रदेश में भूसे की पैदावार अच्छी नहीं है। ऐसा चलता रहा, तो अगले साल तक प्रदेश भर के घोड़े, बैल और गधे भूखों मर जायेंगे। क्या उपाय करना चाहिये। मैंने कहा, गधों के मरने से आप इतना घबराते क्यों हैं, मानो कोई अपने सगे भाई मर रहे हों। आप बेकार चिंता कर रहे हैं। ऐसा कीजिये। अब जितना भूसा होगा, वे सब पहले घोड़ों और बैलों को खिलवाइए और गधों को मरने दीजिये। गधे सब मर जायेंगे, तब उनकी खोपड़ियाँ तोड़-तोड़कर भूसे निकलवाइये। एक तरफ गधे सब मरेंगे, दूसरी तरफ भूसे भी हाथ आयेंगे। इसको कहते हैं, एक पंथ दो काज। मंत्री जी बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने यहाँ तक कहा कि आप ही को मंत्री पद मिलना चाहिये था। राजनीति से आपका बाहर रहना जनता के लिए नुकसान की बात है। मैंने कहा, न, न, ऐसा मत कहिये। आई एम सैटिसफाइड विद माई क्वाइएट लाइफ बाई नेचअर। पोलिटिक्स-बोलिटिक्स में मेरी कोई रुचि नहीं है। बट, हाँ, इफ यू लाइक ओर यू नीड, यू कान कोन्सल्ट विद मी एट एनि टाइम। यू आर वेलकम। ऐसा है।

छ. : एक बात नहीं समझ आती है। खोपड़ी में भूसे क्यों?

शु. : यही तो हिन्दी की विशेषता है। आँखों में सरसों फूल सकता है, पेट में चूहा दौड़ सकता है। खोपड़ी में भूसे का होना क्या बड़ी बात है ?

छ. : जी, आपका कहना बिलकुल सही है ।

शु. : सही ही कहता हूं। झूठ क्या चीज है, मैं जानता भी नहीं। वैसे हमारी नजर में झूठ और सच में कोई अन्तर नहीं है। मतलब तर्क से है, सिद्धान्त से है, लोजिक से है। लोजिक परफेक्ट है, तो वह सच है। लोजिक इम्परफेक्ट है, तो वह गलत हो सकता है, पर झूठ नहीं।

छ. : अगर कोई चोर यह कहेगा कि मैंने चोरी नहीं की, तो यह झूठ नहीं है ?

शु. : यदि वह चोर चोरी को चोरी नहीं समझता है, तो वह सच कहता है कि मैने चोरी नहीं की।

छ. : चोरी तो चोरी ही है।

शु. : नहीं। इट इज नोट इम्पोर्टन्ट फोर अस हिन्दू वाट इज द फैक्ट। क्या कहें इसमें महत्व नहीं। किस तरह कहें, यही हमारे लिये इम्पोर्टन्ट है। हम हमेशा इसी प्रयास में हैं कि अपना अपना लोजिक, अपना अपना सिद्धान्त कायम रहे, जिससे कि वास्तविकता की व्याख्या की जा सके । संसार में अगर एक मानव भी न रहता, तो वास्तविकता होती। पर मानवों के बीच जिसको वास्तविकता कहा जाता है, वह हमारी व्याख्या के अधीन है। हमारे लिये इक्सप्रेशन ही सब कुछ है। ईसाई लोगों के लिये यह सब भगवान की ओर से निश्चित किया गया है कि सच क्या है और झूठ क्या है। हमारे लिये भी भगवान जिसको सच कहेगा, वह सच है, जिसको झूठ कहेगा, वह झूठ है। पर वह भगवान कहीं बाहर या आसमान में नहीं रहते, वह हमारे अन्दर ही रहते है। या यों कहें कि हम खुद एक-एक भगवान हैं। ईसाई लोग फैक्ट की व्याख्या को मसीह से मांगते हैं, हम अपने-अपने अन्दर के भगवान से मांगते हैं। यहाँ सच और झूठ का प्रश्न नहीं उठता है। सब कुछ सच हैं। हम युनिवर्सेलिटी को एक इन्डिविडयुअल के अन्दर यानी अपने अन्दर देखते हैं। मानवों के बीच में नहीं देखते हैं। संसार की सब चीजें इसलिये रेलेटिव हैं कि हम इन्डिविडयुअल में ऐबसेल्यूटिविस हैं। वी आर द ग्रेटिस्ट रेलटिविस्ट ओफ द वर्ल्ड अज अ सोशल बीइन्ग, बट अज अन इन्डिविडयुअल वी आर द ग्रेटिस्ट ऐबसल्यूटिस्ट ओल्सो। इन माने में हम कहते है कि भगवान कृष्ण हो, या राम हो, सब हमारे अन्दर रहते है। जब हम पूजा करने मन्दिर जाते हैं, तब हम अपने आपसे मिलते हैं और अपनी पूजा करते हैं।

छ. :तो आप भी भगवान शुक्ल हैं?

शु. : बिल्कुल।

छ. : मैं कह नहीं सकता कि कहाँ तक आपकी बात समझ सका।

शु. : कोई बात नहीं। समझ का घर दूर है। यह कोई पाप नहीं कि ऊँची बातें समझ नहीं सकते। अच्छा, मैं लाम की बात कर कहा था। यू मस्ट सी फ्रोम अनदर पोइन्ट ओफ व्यू। जैपनीज इन्डस्ट्री ने बहुत बड़ी, अद्‌भुत उन्नति की है।

अब उसका जी.एन.पी. रुस और अमरीका को छोड़ दुनिया में सबसे बड़ा है। लेकिन मैं तो कहूंगा, यह सब प्राइस की उन्नति हैं। लेकिन भारत की संस्कृति प्राइस की नहीं है, वैल्यू की है। समझे ? ठीक है, सुनो। बताता हूं। प्राइज इज वन थिंग एण्ड वैल्यू इज क्वाइट अनदर थिंग। कारखाने में कैमरा जो बनता है, उसको खरीदकर तुम खुश हो जाओगे। पर वह खुशी प्राइस की खुशी है, मटिअरिलिटि की खुशी है। लेकिन अच्छी कविता पढ़कर जो खुशी मिलती है, वह वैल्यू की ज्योई है। यानी स्पिरिच्युअल ज्योई है।

छ. : पैसा देख कर जो खुशी मिलती है, वह प्राइस की ज्योई है या वैल्यू की ज्योई ?

शु. : तुम ने समझा नहीं। अच्छा, एक बात सुनो। जापान के बारे में लोगों का विचार यह है कि जैपनीज नकल करने में स्किलफुल हैं, यानी सिद्धहस्त है। हिन्दी समझते हो न ? इफ यू फाइन्ड इट डिफिकल्ट टू फोलो माई प्युअर हिन्दी सो कहना।

छ. : शुक्रिया। लेकिन हिन्दी को हिन्डी कहें, तो आपकी हिन्डी और प्युअर हो जाएगी।

शु. : तुम तो हिन्दी की चिन्दी निकालते हो। यह आदत तुम्हारी कतई पसंद नहीं मुझे। मैने कब द को ड और ड को द कहा। द और ड का अलग प्रनाउन्सिएशन है, यह तो बच्चे भी जानते हैं।

छ. : मुझे लगता है कि बच्चे ही जानते हैं।

शु. : ऐं ? क्या कहा तुम ने ?

छ. : कुछ नहीं। आप गलत समझ रहे हैं। मैं यह कहना चाहता था कि बीच-बीच में आप एकदम से इतनी प्युअर हिन्दी बोलने लगते हैं कि ` सिर में चक्कर आने लगता है। लेकिन लगभग ठीक-ठीक मैं समझता हूं और यदि हिन्दी का बहुत ही कठिन शब्द आये, तब अवश्य आपसे से पूछूँगा मैं।

शु. : ठीक है। अच्छा, लोग कहते हैं कि जैपनीज नकल करते हैं, पर उनमें ओरिजिनेलिटी कम है। आई डोन्ट अग्री टू दिस ओपिनियन माईसेल्फ। पर लोगों की मान्यता यह है। कार, कैमरा,घड़ी, वह भी बढ़िया से बढ़िया, सीको की तरह, बनते हैं खूब। लेकिन ये सब पाश्चात्य संस्कृति की उपज है। जापान की ओरिजिनेलिटी की उपज नहीं है।

छ. : तो बताइयेगा, थाईलैंड में क्या ओरिजिनेलिटी है जो जापान में नहीं है। आस्ट्रेलिया में क्या ओरिजिनेलिटी है जो जापान में नहीं है। सीधी सी बात है। अगर इन देशों में यदि ओरिजिनेलिटी है, तो जापान में भी होगी। यदि इन देशों में ओरिजिनेलिटी नहीं है, तो जापान में भी नहीं होगी। पर इन सब देशों के पास यदि ओरिजिनेलिटी नहीं है, तो संसार के किस देश के पास ओरिजिनेलिटी है ?

आप शायद यह कहेंगे कि जापानी ने पहले चीनियों की नकल की थी अब अमरीकियों की करते हैं। तो मैं कहूंगा कि आर्यों ने भी द्रविडों की कम नकल नहीं की। आखिर ओरिजिनेलिटी से आपका क्या मतलब है ?

शु. : ओरिजिनेलिटी से मेरा मतलब है, अपनी फिलोसोफी है और अपना प्रिन्सिपल है। इन्डिया ने जापान को बुद्धिजम दिया। दुनिया भर को फिलोसोफी दी।

यू कान्ट इमैजिन हाउ फार इन्डियन फिलोसोफी हैज इनफ्लुअन्सड द थोट्स ओफ द वर्ल्ड सिन्स टाईम इममेमोरिअल। जैपनीज रेडियो बहुत अच्छा बनाते हैं। बट दे हैव नो देअर ओउन फिलोसोफी एन्ड प्रिन्सिपल। हमारी फिलोसोफी, संस्कृति और इतिहास के सामने सोनी का रेडियो कितनी छोटी चीज है।

छ. : लेकिन सम्राट अशोक के जमाने में अगर सोनी का रेडियो होता, तो वे अवश्य भारत-जापान मैत्री संघ का सदस्य बन जाते।

शु. : तुम भी अजीब कहते हो ? उस जमाने में रेडियो कैसे ?

छ. : तो रेडियो को सोना कहिए या हीरा। एक ही बात है।

शु. : रेडियो हो या सोना हो, उससे हमारा कोई मतलब नहीं है। बात संस्कृति की है। जैपनीज ने घड़ी या रेडियो को संस्कृति समझ रखा है, जोकि बिल्कुल गलत है। हमारे लिए संस्कृति कुछ दूसरी चीज है जो कारखानों में बनती नहीं और घड़ी या कैमरे के दाम बिकनेवाली भी नहीं।

जैपनीज के मित्र की हैसियत से मैं सलाह यह देता हूं कि नकल करते रहने से कोई स्पिरिट्युअल प्रोग्रेस नहीं हो सकेगा। वेद में भी लिखा है "नकल रा चे अकल" यानी नकल में अकल की क्या जरुरत।

छ. : आप अपने को जापानियों का मित्र कहते हैं। लेकिन मान लीजिये हमारे पास कोई रेडियो या घड़ी नहीं होती, फिर भी हमारे साथ दोस्ती करना चाहेंगे ? सच पूछिये तो यदि आपके स्थान पर मैं होता तो शायद ही मैं चाहूंगा।

शु. : वेद में भी यह लिखा है "जइसन छिनरी आप छिनार ओइसन जाने सभ संसार" हमारी फिलोसोफी ने भूख तक को पोजिटिवली अपनाया है। तुम्हें महात्मा गाँधी जी का स्मरण करना चाहिए। जिनके लिए भूख कुछ भी नहीं है, उनके लिए मटिअरिअलिटी का अर्थ ही नहीं रहता। जैपनीज अपनी पुरानी संस्कृति को छोड़ रेडियो के पीछे पागल हो गये हैं। इसका नतीजा यह हुआ कि जापान इम्पेरिअलिज्म का शिकार हो गया और सारा एशिया जैपनीज इम्पेरिअलिज्म का शिकार। यह हुई बहुत बड़े दुःख की बात।

छ. : वह बड़े दुःख की बात थी। इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन यह भी सच था कि एशिया में अगर एक देश ने भी गोरों का सामना न किया होता, तो आज हम सब की क्या हालत होती। जरा इस पर भी ध्यान दीजिए।

शु. : लेकिन जैपनीज इम्पेरिअलिज्म के कारण कितने लोग मारे गये थे।

छ. : किसी लड़ाई में मनुष्यों का मर जाना स्वाभाविक है।

शु. : जैपनीज सैनिकों ने किसानों, व्यापारियों, बूढ़ों और औरतों को भी यानी निर्दोष, निर्बलों को भी क्रूरता से मार डाला है।

छ. : जो लोग उस अत्याचार में शामिल थे, उनके पास माफी मांगने के लिए शब्द भी नहीं होगा। बल्कि जो माफी मांग रहे हैं या पछतावे के आंसू बहाते हैं, वे सब दिखावे के लिये ही करते हैं। सचमुच जो अपने किये का भोग रहे हैं, वे चुप्पी साधने के सिवा कुछ नहीं कर सकेंगे। उनकी ओर से मैं केवल यही कहना चाहता हूं कि उस प्रकार का अत्याचार किस ने नहीं किया, कौन नहीं करता है और आगे कौन नहीं करेगा।

शु. : मैं तो कभी नहीं करूँगा। सोच भी नहीं सकता हूं। इस तरह के अत्याचार की खबरें पढ़ने भर से सिहर उठता हूं। यह जो तुम लोगों ने लड़ाई में किया है, वह मानवता के प्रति चुनौती है, मानवता का घोर अपमान है।

छ. : मुझ से बड़ी गलती हुई होगी, तभी तो आप इतना गुस्सा कर रहे हैं। अब आज्ञा दीजिये। मैं चलता हूं।

जेन कथा

एक वृध्द श्रध्दालु महिला गत २० वर्ष से एक भिक्षु की सेवा कर रही थी। उसने उसके लिये एक कुटिया डलवा दी और उसके भोजन आदि की सारी व्यवस्था भी उसने अपने हाथ में ले रखी थी।

एक दिन उसके मन में उस भिक्षु की साधना की परीक्षा लेने की बात उठी। उसने एक युवती की मदद ली। उस वृध्दा के सिखाये अनुसार युवती भिक्षु के पास गयी। जाते ही उससे प्रेम-निवेदन करती हुई उससे लिपट गयी और मदभरी आँखों से बोली, "अब ?"

भिक्षु ने निर्विकार,गंभीर शब्दों में कहा,

"एक बूढ़ा वृक्ष
ठण्डी चट्टान पर
शीत-ऋतु में।"

और युवती को अपने से अलग करते हुए सहज शान्त स्वर में बोला,

"यहाँ उष्णता कहाँ !"

युवती ने लौटकर वृध्दा को पूरी कथा कह सुनायी। वृध्दा भड़क उठी-

"ऐसे जड़ पत्थर को मैं बीस वर्ष तक खिलाती रही। भले ही उसने अपनी वासनाओं को जीत लिया हो,उसे तुम्हारी देह की माँग या लालसा की भी समझ न हो पर क्या वह तुम्हारे प्रति कुछ मानवीय भी नहीं हो सकता था !"

वृध्द महिला क्रोध में भिक्षु की कुटिया की ओर गयी और उसने उसकी कुटिया को आग लगाकर राख कर दिया।

-प्रो.सत्यभूषण वर्मा

अमरीकी विश्वविद्यालय में पंजाबी का गहन पाठ्यक्रम

- प्रोफेसर तोमिओ मिज़ोकामि -

कितना सुखद संयोग था कि जापान भारती (अंक ३) में प्रो . हरमजन सिंह के सम्मान में प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल द्वारा लिखित लेख पढ़ने को मिला ।

प्रो. हरमजन सिंह मेरे भी गुरू हैं - पंजाबी के । मेरी उनसे पहली मुलाकात आज से बीस साल से भी अधिक पहले डाक्टर विज्येंद्र स्नातक के कमरे में हुई थी जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ता था । तब डाक्टर स्नातक हिंदी विभाग के अध्यक्ष थे ।

मैं कोई औपचारिकता निभाने के लिए हिंदी विभागाध्यक्ष के कमरे में स्नातक जी की प्रतीक्षा कर रहा था तो स्नातक जी ने एक वरिष्ठ सरदार जी को साथ लेकर प्रवेश किया। पता नहीं क्यों मेरी छठी इन्द्रिय तुरंत क्यों बता सकी कि यह पंजाबी के प्रोफेसर हैं । तब तक मैंने न उनका चेहरा देखा था, न उनका नाम सुना था । मेरा ज्ञान बस इतना ही था कि पंजाबी के विद्वान अक्सर सरदार (या सरदारनी ?) हुआ करते हैं और मैं पंजाबी सीखना चाहता था । स्नातक जी साथ बात समाप्त करते ही मैं इन्हीं सरदार जी से पूछ बैठा कि क्या आप पंजाबी के प्रोफेसर हैं ? मैं पंजाबी सीखना चाहता हूँ । सर्टिफ़िकेट कोर्स में दाखिला कराइये । मेरा अनुमान बिल्कुल सही था । वे दिल्ली विश्वविद्यालय के आधुनिक भारतीय भाषा के एकमात्र पंजाबी के प्रोफ़ेसर थे। (विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर आर. के. दासगुप्ता थे जो बँगला साहित्य के प्रकांड विद्वान थे ।) बाद मैं वे अध्यक्ष बने । अब पंजाबी विभाग स्वतंत्र विभाग है ।

उन्होंने मुस्कराकर (प्रो. ओम्प्रकाश सिंहल जी ने ठीक ही लिखा है - निच्छल मुस्कान के धनी हैं।) तत्क्षण उत्तर दिया - ठीक है, कर देंगे । बाद में मुझे पता चला कि डाक्टर हरभजन सिंह एक अच्छे अध्यापक के अलावा कवि और आलोचक के रूप में भी विख्यात हैं । पिछले पचास वर्षों से वे पंजाबी साहित्य और चिंतन जगत् के साथ जुड़े हुए चिंतन की मौलिकता और विचारात्मक सौष्ठव के लिए माने जाते हैं । उनकी जितनी गोष्ठियाँ थीं - हिंदी में हो या पंजाबी में हो मैं ने हिस्सा लिया था और कभी-कभी प्रश्न भी किया था । पंजाबी में डिप्लोमा करने के बाद उन्होंने मुझे पी. एच. डी. करने के लिए प्रेरित किया था।

डाक्टर हरभजन सिंह के पिता जी का देहांत तब हुआ था जब उनकी आयु बहुत छोटी थी । माता जी ने बहुत कष्ट के साथ उनका पालन पोषण किया था । मेरे पिताजी की मृत्यु भी मेरी छः वर्ष की अवस्था में हुई थी । बचपन का दारिद्रय , माँ का कष्टमय जीवन - इन बातों में डाक्टर हरभजन सिंह और मैं सामान्य भाग के हिस्सेदार हैं । इसलिए उनकी प्रसिद्ध कविता ' मेरा बचपन अजे न आया ... ' ' भेड़े घटे गभरु हो जा ....' विशेषकर मेरे लिए मर्मस्पर्शी और संवेदनशील लगती हैं । अपनी पंजाबी की कक्षा में मैंने यह कविता पढ़ाई थी ।

डाक्टर हरमजन सिंह को तब (जब मैं उनका विद्यार्थी था) कदाचित ही यह अनुमान हुआ हो कि यह आदमी भविष्य में अमरीका जाकर पंजाबी पढ़ाएगा । यह अवसर डाक्टर आत्मजीत सिंह के प्रयत्न से मिला था । हाल ही में समाचार मिला है कि प्रोफ़ेसर हरभजन सिंह को गिरीलाल जैन कविता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अतः उन्हें इस पुरस्कार - प्राप्ति के लिए कोटिशः कोटिशः अभिनंदन !

मैं यह लेख प्रोफ़ेसर हरभजन सिंह को वाहे गुरु जी से उनकी शीघ्र आरोग्य प्राप्ति की कामना करते हुए समर्पित करता हूँ। डाक्टर साहब इसे मेरी गुरुदक्षिणा समझेंगे ।

अमरीका में सब से पहला पंजाबी का पाठ्यक्रम कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय (बर्कले) में सन् १९९३ ई.में आरम्भ हुआ। अध्यापक के रूप में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के पंजाबी अध्ययन विभाग के भूतपूर्व प्रोफेसर आत्मजीत सिंह को नियुक्त किया गया । उक्त विश्वविद्यालय अपने उच्च शैक्षिक स्तर तथा उपलब्धि के लिए विश्व प्रसिद्ध है और यहाँ का दक्षिण - एशियाई अध्ययन

विभाग भी उच्च - कोटि का माना जाता है । इस विभाग में पंजाबी के अतिरिक्त संस्कृत, हिंदी , उर्दू तमिल के पाठ्यक्रम हैं ।

इसी विश्वविद्यालय में पंजाबी पाठ्यक्रम के शुरु होने का कारण संभवतः पश्चिम अमरीका में बढ़ती हुई पंजाबियों की आबादी है।कहते हैं कि सिर्फ़ कैलिफ़ोर्निया में कम से कम दो लाख (भारतीय) पंजाबी प्रवासी रहते हैं।

अमरीका में पैदा होने के कारण ये पंजाबी युवक और युवतियाँ गुरुमुखी लिपी तथा पंजाबी व्याकरण से भले ही अनभिज्ञ हों, फिर भी बोलचाल की पंजाबी सहज ही समझ लेते हैं और बोलना भी जल्दी सीख लेते हैं । दो साल में गुरुवाणी भी पढ़ लेते हैं और कहानियाँ भी।

१९९४ के ग्रीष्मकाल में इसी विश्वविद्यालय में पंजाबी का गहन पाठ्यक्रम भी शुरू कर दिया गया । इस पाठ्यक्रम के लिए मुझे विसिटिंग प्रोफ़ेसर नियुक्त किया गया । मेरे लिए गौरव की बात तो थी पर मन में कुछ तनाव था कि अंग्रेजी के माध्यम से कैसे पढ़ाऊँ । मेरी अंग्रेजी इतनी अच्छी नहीं हैं कि उस भाषा में पढ़ा सकूँ । पर कैलिफ़ोर्निया आकर पता चला कि पाँचों के पाँच विद्यार्थी (हम उन्हें पंज प्यारे कहते थे) भारत मूल के पंजाबी गभरू (युवक) और मटियारां (युवतियाँ) थे । उन्होंने मुझ से कहा कि पंजाबी में पढ़ाइए।

अंग्रेजी वाला तनाव मिट तो गया पर मन ही मन मैं यह भी चाहता था कि अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाने से मेरी अंग्रेजी का अभ्यास हो जाएगा । हाँ , पंजाबी में पढ़ाना भी मेरा लिए पहला अनुभव था - मन में एक नया तनाव पैदा हो गया ।

अमरीकी विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम संबंधी नियमावलियों में काफ़ी लचीलापन है । ग्रीष्मकालीन गहन पाठ्यक्रम तो इसी विश्वविद्यालय में तैयार किया हुआ पाठ्यक्रम है पर बाहर का कोई भी विद्यार्थी आ सकता है और उन्हें यूनिट मिल सकता है । यहाँ तक कि हाई स्कूल के छात्र भी प्रधानाचार्य की अनुमति से आ सकते हैं और परीक्षा में प्राप्त अंक अपने हाई स्कूल के यूनिट में गण्य किया जा सकता है । जापानी शैक्षिक प्रणाली में ऐसा बिल्कुल असंभव हैं ।

उन **पाँच प्यारों** में तीन तो इस प्रकार हाईस्कूल के छात्र थे । एक कम्यूनिटी कालेज का छात्र था । अपने कैलिफ़ोर्नियाँ विश्वविद्यालय का विद्यार्थी तो केवल एक था - वह भी बिसनेस स्कूल का । अतः पाँचों की रुचि अलग अलग थी और बौधिक स्तर में भी काफ़ी अंतर था । विषमता में समता लाना सर्वत्र शिक्षा की कठिन समस्या है । पर उक्त पाँच विद्यार्थियों के लिए उच्चारण की समान रूप से कठिनाइयाँ भी थीं । उदाहरण के लिए

१) अमरीकी अंग्रेजी में शब्द की आदि में आनेवाला व्यंजन प्रायः महाप्राण होता (यद्यपि अंग्रेजी में महाप्राण और अल्पप्राण अलग ध्वनिग्राम नहीं हैं) संभवतः इसी कारण किताब / को / खिताब , तैनूँ / को / थैनूँ और कपड़ा / को/ खपड़ा की तरह उच्चारण करते हैं और लिखते भी ।

२) मूर्धन्य व्यंजनों को दंतव्य में उच्चारण करते हैं और प्रायः लिखते भी । उदाहरण के लिए / रोटी / को / रोती /, माणदा / को / मानदा, और / माणदा / को / मानदा , इत्यादि । लिखने बोलने की अशुद्धियों का रूप तो जापानी विद्यार्थियों का जैसा है, परंतु उल्लेखनीय बात तो यह है कि वे अपने माँ- बात तथा अन्य पंजाबी बुजुर्गों की बातचीत सुनते रहने के कारण इन मूर्धन्य व्यंजनों को सुनकर तो सरलता से पहचानते लेते हैं । बहुत प्रचिलित शब्द हों तो ठीक उच्चारण भी कर लेते हैं ।

३) पंजाबी भाषा की अन्यतम बड़ी विशेषता स्वराघात है । यह ध्वनिग्राम भी है । पर पंजाबी बच्चों को लिखते समय बहुत कठिनाई आती है । ढेर सारी गलतियाँ करते हैं । उदाहरण के लिए - धी / को / डी / , धुप्प / को / तुप, झंडा / को / चंडा बोलते और लिखते हैं ।

४) स्वर का लोप भी सामान्य रूप से मिलता है, जैसे - दरिया / का / दरया , प्रसिद्ध / को / प्रसध , कहते हैं।

५) स्वरों की मात्रा में भी अशुद्धियाँ पाई जाती हैं - उदाहरणार्थ / पाणी / के लिए / पैनी , पैर / के लिए / पार , बैठ / के लिए / बात , / मुंडा / के लिए / मूंडा , इत्यादि ।

६) कभी कभी हिंदी के शब्द रूप को अनजाने में पंजाबी में लाते हैं जैसे - ऊँगलियाँ , होना चाहिए था, कर दिया उँगल ।

७) एक बहुत दिलचस्प बात यह है कि अंग्रेजी में j या z को y में बोलने की पंजाबी भाषियों की प्रवृत्ति पंजाबी बच्चों में पंजाबी में पाई गई हैं । जैसे बुजुर्ग / को / बुयुर्ग कहा गया ।

मेरे ख्याल में जिस पारिवारिक या सामाजिक वातावरण में वे पंजाबी बच्चे पले और पलते हैं उन्हें उसका पूरा फायदा मिलना चाहिए था। पर ऐसा मुझे नहीं लगा । बिना परिश्रम किए बोलचाल की पंजाबी लगभग १०० प्रतिशत समझ लेते हैं - यही बात आगे बढ़ने को रोक देती है । हिंदी में एक प्रसिद्ध कहावत की याद आती है - ' नीम हक़ीम खतरे जान ' । जो एक दम शून्य से शुरु करेगा वह मेहनत करेगा ।

इस वर्ष की ग्रीष्मकाल में भी कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में पंजाबी के गहन पाठ्यक्रम की व्यवस्था की गई । इस साल तो तेरह विद्यार्थियों ने दाखिला लिया है । पिछले साल से एकदम ढाई गुणा बढ़ गए । हाईस्कूल का कोई छात्र नहीं आया । दूर शिकागो से एक विद्यार्थिनी पंजाबी पढ़ने कैलिफ़ोर्निया आई है। इस लड़की के अलावा भी दो अमरीकी (वैसे राष्ट्रीयता की दृष्टि से भारत - मूल के विद्यार्थी भी अमरीकी हैं, पर यहाँ अमरीकी का मतलब यूरोप मूल के लोगों से है।) , एक ऑस्ट्रेलिया से आई लड़की,न्यूज़ीलैन्ड से आया लड़का भी था । बाकी सब भारत मूल के थे-एक गुजराती,बाकी सब पंजाबी,जर एक लड़के की माँ गोरी अमरीकी थी।

सामान्य रूप से पिछले साल के **पंज प्यारों** की तुलना में वे सब परिपक्व थे। परन्तु स्तर में विषमता पिछले साल से अधिक थी जिससे डॉक्टर आत्मजीत सिंह को पढ़ाने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इस साल मुझे औपचारिक रूप से नियुक्त नहीं किया गया था ,पर मैं अनौपचारिक रूप से कक्षा में बैठा था और सर्वेक्षण करता रहा कि वे कैसे पंजाबी पढ़ते हैं। विशेष रूप से मेरा ध्यान अमरीकी विद्यार्थियों की ओर अधिक था ,क्योंकि जापानी विद्यार्थियों से तुलना करना चाहता था।

गोरे अमरीकियों और भारत मूल के छात्रों में सब से बड़ा अन्तर व्याकरण को लेकर है। अमरीकी छात्रों के लिए व्याकरण ही एकमात्र सहारा है,जिस तरह जापानी छात्र भी व्याकरण के बिना भाषा सीख नहीं सकते,किन्तु भारतीय विद्यार्थी व्याकरण की ओर अधिक ध्यान नहीं देते। वे जल्दी बोलना सीखना चाहते हैं और पंजाबी सँस्कृति से परिचय पाना चाहते हैं,सो व्याकरण की शुष्क व्याख्या उनको भाती नहीं। भारतीय बच्चों को पंजाबी पढ़ने और बोलने के लिए खास व्याकरण जानने की ज़रूरत नहीं है,परन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है कि उनको भी व्याकरण के बहुत महत्वपूर्ण नियमों से पूरी तरह अवगत होना चाहिए।

अमरीकी विद्यार्थी बहुत व्यस्त रहते हैं। इन आठ सप्ताहों में कोई भी विद्यार्थी केवल पंजाबी अध्ययन में समय नहीं दे सकता था। बारह बजे कक्षा समाप्त होते ही सब भाग जाते थे। कोई न कोई दूसरा काम भी करते हैं। हाज़िरी भी नियमित नहीं थी। इतवार या शनिवार को कक्षा के बाहर पंजाबी सँस्कृति से संबधित किसी कार्यक्रम में शामिल होने के लिए कहा गया फिर भी कोई भाग लेने को तैयार नहीं था। भौगोलिक दूरत्व के अलावा,हर विद्यार्थी किसी न किसी दूसरे काम में लगा रहता है।

स्मरण रहे कि आज से दशक पहले जापान में सबसे पहले पंजाबी का गहन पाठ्यक्रम ओसाका में हुआ था (रोज़ छः घण्टे ,सप्ताह में छः दिन और पाँच सप्ताह का था)तब हर इतवार को कोबे स्थित गुरूद्वारे में सभी छात्रों को ले जाते थे और लंगर छकाने के बाद प्रवासी पंजाबी के घर में चाय के लिए बुलाते थे। प्रायः सभी विद्यार्थी हर इतवार को आते थे। अमरीकी छात्रों से इस प्रकार की आशा नहीं की जा सकती । यह कहना कठिन है कि अमरीकी विद्यार्थियों और जापानी विद्यार्थियों के कौन अधिक परिश्रमी और भाषा-शिक्षण में योग्य है। अमरीकी विद्यार्थी **उत्तम** और **दरिद्रतम** के दो छोर पर थे, बाकी भारत मूल के विद्यार्थी **मध्यम वर्ग** रहे।

भारतीय छात्रों की श्रवणेन्द्रिय बहुत प्रखर हैं। एक बार कक्षा में पंजाबी वार्तालाप का टेप सुनाया गया और उसकी पाठ्यपुस्तक को पढ़ते-पढ़ते सुनने को कहा गया (जिसे पहले किसी छात्र ने नहीं देखा था) और बाद में प्रत्येक छात्र से पूछा गया कि लगभग कितनी प्रतिशत समझ में आया ? किसी ने कहा, लगभग सब समझ में आया, किसी ने कहा, लगभग पचास प्रतिशत, किसी ने कहा, बिल्कुल समझ में नहीं

आया। लेकिन एक पंजाबी लड़के की प्रतिक्रिया मेरे लिए और अमरीकी छात्रों के लिए कम आश्चर्य की बात नहीं थी। उसने कहा कि पाठ्यपुस्तक पर दृष्टिपात करने पर समझ में नहीं आया, पर बिना पाठ्यपुस्तक के सुनते रहने से समझ में आता है।

जापानी और अमरीकी विद्यार्थियों के लिए एक शब्द भी बिना अक्षर ज्ञान के केवल सुनकर समझ सकना कल्पना के बाहर है। यदि इतनी सुविधा (जन्मसिध्द !) प्राप्त है तो थोड़ी-सी मेहनत करके पढ़ने और लिखने पर भी अधिकार प्राप्त क्यों नहीं कर सकते? यही प्रश्न सहज रूप से हमारे मन में उत्पन्न हो सकता है। जापानी विद्यार्थियों को पंजाबी व्याकरण समझाना बहुत कठिन नहीं है,पर उनको बुलवाना बहुत कठिन कम है।

अमरीका में गहन् पंजाबी पाठ्यक्रम से बहुत कुछ सीखने को मिलता है। अपंजाबी भाषियों और पंजाबी भाषियों को साथ समान रूप से पढ़ाना बहुत कठिन है (जापान में केवल जापानी छात्रों को पंजाबी शिक्षण दिया जाता है।), परन्तु कक्षा का माहौल बहुत अच्छा और सौहार्दपूर्ण है। आशा की जाती है कि इस गहन् पाठ्यक्रम के माध्यम से अधिक से अधिक अमरीकी विद्यार्थी पंजाबी भाषा पढ़ें जिससे जापानी छात्रों को भी प्रेरणा मिलती रहे।

-तोमिओ मिज़ोकामि-
प्रोफेसर,भारतीय भाषा , ओसाका विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय

समुद्र-तट पर घिरती सांझ

खूबसूरत नामी टापू पर जाने वाले
सैलाबियों के इंतजार में
ऊँघ रहा है
खाली नाव पर बैठा मल्लाह
बह रहा खारा बासीपन नसों में
मन लहराता उथले मैले समंदर सा

जवानी की कमाई
जवानी में उड़ाई
फीका-फीका मुस्काता है मल्लाह
मुँह से निकलते-निकलते रह जाती है
एक नामालूम सी आह
स्मृतियाँ भी आश्वस्त नहीं करती
तेजी से घिरती सांझ में
बढ़ रही ठंड और ठिठुरन
न घर की ललक
न बिस्तर की
एक दार्शनिक सी दीर्घ उदासी
फैलती जा रही ... फैलती जा रही ...

सब मनचले सैलानी तेज
स्टीमरों पर सवार
मल्लाह ऊँघ रहा मन मार उम्र के किनारे
समंदर में डूबते जा रहे आखरी उजाले और आखरी सपने

प्रो. हरजेन्द्र चौधरी

ज़िन्दा हैं हम रहेंगे ज़िन्दा

ये बहारें, फिज़ा के खुशनुमा नज़ारे
नदियों में थिरकती लहरों के सहारे

जो मस्ती का आलम बिखरा है आज
है हमारी एख़लाकी बुलन्द का साज़

आज का यह पुरजोश जलसा
दिलाता है याद एक वाकया ऐसा
कि इत्तेहाद-ए-कौम है कुव्वते वतन
कि निछावर है इस पर हमारा तन-बदन
दिखाओ न हमको तुम्हारी सुर्ख आँखें
न भूलो हम फेकेंगे तोड़ तेरी पाँखें

एक थे हम, एक हैं, और एक रहेंगे
ज़िंदा थे हम, ज़िन्दा हैं और ज़िन्दा रहेंगे ।

- बालकृष्ण गर्ग, कलकत्ता

(यह कविता विशेष रूप से शांति-मुक्ति अंक के लिए लिखी गई थी परंतु देर से प्राप्त होने के कारण हम इसे इस अंक में प्रकाशित कर रहे हैं । - संपादक)

নিবেদন

সর্বমঙ্গলমঙ্গল্যে শিবে সর্বার্থসাধিকে।

শরণ্যে ত্রম্বকে গৌরী নারায়ণি নমোহস্তু তে।।

বহু প্রাচীনকাল থেকে ভারতবর্ষে চলে আসছে শক্তির উপাসনা। নানা নামে পরিচয় এই শক্তির। কখনও তিনি দুর্গা, কখনও তিনি উমা, কেউ বলে লক্ষ্মী, কেউ বলে ভারতী। দেবীর নামের শেষ নেই। গিরিজা, হৈমবতী, অম্বিকা, ভদ্রকালী, চন্ডী, মাহেশ্বরী, কৌমারী, বারাহী আরও কত!

ভক্ত রামপ্রসাদের কথায় বলা যায়

'জেনেছি জেনেছি তারা তুমি জান ভোজের বাজি,

যে নামেতে যে ডাকে মা, তেমনি তুমি হও মা রাজি।

যদিও চোখে পড়ে না আঙিনায় ছড়িয়ে থাকা শিউলি ফুলের রাশি, বাতাসে ভেসে আসে না শিউলি ফুলের গন্ধ, তবু এত দূর দেশে বসেও নীল স্নিগ্ধ আকাশে ভেসে যাওয়া পুঞ্জ পুঞ্জ মেঘের দিকে তাকিয়ে মনে পড়ে যায় শরৎ এসেছে, শরৎ এসেছে। আনন্দময়ী এসেছেন। কয়েকটা দিনের জন্য হলেও সবাই মেতে উঠবে শারদোৎসবে।

স্থানীয় বাঙালীদের উদ্যোগে আজ কয়েক বছর হ'ল কান্তো অঞ্চলে দুর্গা পূজা শুরু হয়েছে। প্রবাসে বড় হওয়া ছেলেমেয়েদের জন্য এই রকম উৎসবের গুরুত্ব অনেক।

জাপান ভারতীর তরফ থেকে সবাইকে জানাই শুভবিজয়ার হার্দিক শুভেচ্ছা। পত্রিকাটির মান উন্নয়ণ, এবং সংরক্ষণের জন্য যাঁরা আমাদের সাহায্য করেছেন তাঁদের কাছে আমরা বিশেষ ভাবে কৃতজ্ঞ।

গত সংখ্যাটির সার্থক প্রকাশন সম্ভব হয় শ্রী বিবেক দাসের সহযোগিতার জন্য। সম্পাদক মন্ডলীর তরফ থেকে তাঁকে বিশেষ ধন্যবাদ জানাই।

-রঞ্জন গুপ্ত

চিঠিপত্র

দেশ থেকে এক মাস পরে ফিরে দেখি একগাদা চিঠি জড় হয়ে আছে। তার মধ্যে দেখলাম অচেনা লোকের পাঠানো একটা খাম। তাড়াতাড়ি খুলে দেখে আনন্দে মন ভরে গেল। জাপানের গত সাত আট বছরে এ রকম সংবাদ কোনো দিন কোনো খামে বয়ে নিয়ে আসে নি।

এতদিনে জাপানের ভারতীয়রা পেল নিজেদের মাতৃভাষিক মুখপত্র। আমাকে পাঠানো 'জাপান ভারতীর' পঞ্চম সংখ্যাটি হিন্দি-বাংলা দ্বিভাষিক। সম্পাদক মন্ডলীতে দেখলাম সুহৃদ রঞ্জন গুপ্তের নাম। টেলিফোন করাতে সব খুলে বলল।

অভিনন্দন জানাই সৌরভ সিংঘলকে, যার প্রচেষ্টায় মুখপত্রটি বাস্তব রূপ নিয়েছে। রঞ্জন আরও জানালো যে পত্রিকাটির মূল উদ্দেশ্য সর্বভারতীয় বহুভাষিক রূপ নেওয়ার। সবাই মিলে চেষ্টা করব যাতে এই স্বপ্ন সফল হয়।

এরকম এক পত্রিকার খুবই প্রয়োজন ছিল। নিজেদের মধ্যে যোগাযোগ রাখার এর চেয়ে ভাল কোন উপায় আছে কিনা জানিনা। পত্রিকাটা খুলেই দেখি অতি পরিচিত শ্রীমতী মঞ্জুলিকা হানারির লেখা।

তা ছাড়াও অচেনা বন্ধুর লেখা। চাক্ষুষ সাক্ষাত না হলেও লেখার মাধ্যমে গড়ে উঠবে নতুন ঘনিষ্ঠতা। এটাও হবে পত্রিকাটির মহৎ অবদান।

এটাকে বাঁচিয়ে রাখার দায়িত্ব আমাদের সকলের।। ব্যস্ত জীবনের মধ্যে সময় বার করে পত্রিকাটির জন্য কিছু লিখব সকলে। প্রবাস জীবনে এটি যেন বয়ে নিয়ে আসে আনন্দ, শান্তি আর আশা।

- সরোজ কুমার চৌধুরী,

তোয়োতা।

আপনজন

বিয়ের কিছু অল্প পরে
জাপান যাবো স্বামীর ঘরে,
শুনেই সবাই খেপিয়ে বলে
বাঙালীর প্রাণ মাছের ঝোলে,
কোথায় পাবি সে সব জিনিষ
রুই, কাতলা, ভেটকী, ইলিশ?
মাছটি পেলে কাঁচাই শুধু
ওদের মুখে 'সাধু, সাধু'।
পারবি কি তুই এক দিনেতে
কাঁচা মাছের ভক্ত হতে?
খাবার দাবার বাদই দিলাম
ঘর বাড়ীতেই কিই বা আরাম?
বাড়ী গুলো তো পাখীর বাসা
বাগান টাগান বৃথাই আশা,
তার উপরে যখন তখন
ভূমিকম্পের নাচন কোঁদন।
কি হবে আর এসব ভেবে
জাপান যখন যেতেই হবে।
যতই ভাবি ভাবনা আর
ঠেকায় চিন্তা সাধ্যটি কার?
ইংরিজীতে কয় না কথা
এও তো বড় বিষম ব্যথা।
জাপানী ভাষা শেখার কথা
ভাবতে গেলেই ঘোরে মাথা।
চিন্তা শতেক মাথায় নিয়ে
চলে এলাম তোওকিওতে
প্লেনের থেকে নেমে আমি
এদিক ওদিক মারি উঁকি।
চারিদিকেতে মিষ্টি হাসি
এরাই হলেন জাপানবাসী,
লাগলো ভালো, নাচলো মন
এরাও আমার আপনজন।

-মীরা ব্যানার্জী, তোকিও

রামের ইচ্ছা

উপমা 'কালিদাসস্য'।

অর্থাৎ উপমায় কালিদাসের জুড়ি নেই। একই কথা বলা যায় এ যুগের 'কবি (জ্ঞানী) শ্রীরামকৃষ্ণ সম্বন্ধেও। আটপৌরে জীবন থেকে চয়ন করা তাঁর উপমা। সহজ, সরল অথচ গভীর। অনায়াস তার ভঙ্গী, কিন্তু লক্ষভেদে অব্যর্থ। এক একটি উপমা এক একটি অনবদ্য চিত্রকল্প। আবার তা নাটকীয় উপাদানে ভরপুর। তার সঙ্গে আবার যোগ হয়েছে তাঁর বলার মুন্সিয়ানা। ফলে বর্ণিত চরিত্র আর পরিপার্শ্ব হয়ে ওঠে জীবন্ত। শ্রোতারা তা শুনে কখনও হাসেন, কখনও কাঁদেন। কখনও স্থির হয়ে যান। তারপর ঘরে ফেরেন গঙ্গার স্নিগ্ধ-শীতল জলে পূণ্য অবগাহনের সুখস্মৃতি নিয়ে। ভক্তদের সাথে কথা হচ্ছিল সংসারে থাকা নিয়ে। সংসারে সং আছে, সার নেই। একটুখানি মজা তো অনেকটাই যন্ত্রণা। তাহলে উপায়?

শ্রীরামকৃষ্ণ বললেন, উপায় সবকিছু ভগবানে সমর্পণ। ভাবা যে, সবই রামের ইচ্ছা। এখন রামের ইচ্ছা ব্যাপারটা কি শোনা যাক শ্রী রামকৃষ্ণের মুখে।

কোনো এক গ্রামে একটি তাঁতী থাকে। বড় ধার্মিক, সকলেই তাকে বিশ্বাস করে আর ভালোবাসে। তাঁতী হাটে গিয়ে কাপড় বিক্রী করে। খরিদ্দার দাম জিজ্ঞাসা করলে বলে, রামের ইচ্ছা, সুতোর দাম একটাকা, রামের ইচ্ছা, মেহনতের দাম চারিআনা, রামের ইচ্ছা, মুনাফা দুই আনা। কাপড়ের দাম, রামের ইচ্ছা, একটাকা ছয়আনা। লোকের এত বিশ্বাস যে তৎক্ষণাৎ দাম ফেলে দিয়ে কাপড় নিত। লোকটা ভারী ভক্ত। রাত্রিতে অনেকক্ষণ চণ্ডীমণ্ডপে বসে ঈশ্বরচিন্তা করে, তাঁর নামগুণকীর্তন করে।

একদিন অনেক রাত হয়েছে, লোকটির ঘুম হচ্ছে না, বসে আছে, এক একবার তামাক খাচ্ছে। এমন সময় সেই পথ দিয়ে একদল ডাকাত ডাকাতি করতে যাচ্ছে। তাদের মুটের অভাব হওয়াতে ওই তাঁতীকে বললে, আয় আমাদের সঙ্গে। এই বলে হাত ধরে টেনে নিয়ে চলল। তারপর একজন গৃহস্থের বাড়ী গিয়ে ডাকাতি করলে। কতকগুলো জিনিষ তাঁতীর মাথায় দিলে। এমন সময় পুলিস এসে পড়ল। ডাকাতেরা পালাল, কেবল তাঁতীটি মাথায় মোট সহ ধরা পড়ল। সে রাত্রি তাকে হাজতে রাখা হল। পরদিন ম্যাজিস্টার সাহেবের কাছে বিচার। গ্রামের লোক জানতে পেরে সব এসে উপস্থিত। সকলে বললে, হুজুর! এ লোক কখনও ডাকাতি করতে পারেনা। সাহেব তখন তাঁতীকে জিজ্ঞাসা করলে, কি গো তোমার কি হয়েছে বল। তাঁতী বললে, হুজুর! রামের ইচ্ছা, আমি রাত্রিতে ভাত খেলুম। তারপর রামের ইচ্ছা, আমি চণ্ডীমণ্ডপে বসে আছি। রামের ইচ্ছা, অনেক রাত হল। এমন সময় রামের ইচ্ছা, একদল ডাকাত সেই পথ দিয়ে যাচ্ছিল। রামের ইচ্ছা, তারা আমাকে ধরে টেনে লয়ে গেল। রামের ইচ্ছা, তারা এক গৃহস্থের বাড়ী ডাকাতি করলে। রামের ইচ্ছা, তারা আমার মাথায় মোট দিলে। এমন সময় রামের ইচ্ছা, পুলিস এসে পড়ল। রামের ইচ্ছা, আমি ধরা পড়লুম। তখন রামের ইচ্ছা, পুলিসের লোকেরা হাজতে দিলে। আজ সকালে রামের ইচ্ছা, হুজুরের কাছে এনেছে।"

অমন ধার্মিক লোক দেখে, সাহেব তাঁতীকে ছেড়ে দেওয়ার হুকুম দিলেন। তাঁতী রাস্তায় বন্ধুদের বললে, রামের ইচ্ছা, আমায় ছেড়ে দিয়েছে।

-আনন্দ

আলাপচারী শিবরাম

বাংলা সাহিত্যে শিবরাম চক্রবর্তী ছিলেন একজন কিংবদন্তী লেখক। সাহিত্য অনুরাগী মাত্রই তাঁকে সবাই চিনতেন এক ডাকে। রসিক সমাজেও তাঁর খ্যাতি ছিল যথেষ্ট। শব্দ নিয়ে খেলায় তাঁর জুড়ি মেলা ভার। শিবরামের লেখা পড়ে অবিরাম হাসতে হোত। সেই শিবরামকে সেদিন আমি স্বপ্নে দেখলাম বা বলা উচিত দেখা দিলেন। সেদিন তাঁর সঙ্গে যে কথোপকথন হয়েছিল তার সবটা মনে নেই। স্মৃতি হাতড়ে যেটুকু উদ্ধার করতে পেরেছি সেটুকু পাঠকদের উপহার দিতে চাই।

লেখক: নমস্কার, কেমন আছেন শিবরামবাবু?

শি:চ: ভালো আছি বলতে পারিনা, তবে ভালো বাসায় আছি। বলতে পারো, অনেকটা মুক্তারামবাবু স্ট্রীটে মুক্ত আরামে থাকার মত।

লেখক: তাহলে ভালো নেই বলছেন কেন?

শি:চ:কারণ মর্তে আমাদের মত লেখকদের দিন ফুরিয়েছে। এখন কেউ হাসির লেখা পড়তে চায় না। হাসির লেখা পড়ে হাসি তো দূরের কথা, লেখককে নিয়ে হাসাহাসি করে। ভাবে বোধহয়, লেখকটির গভীরতা কম। মর্তে যতদিন ছিলাম 'অল্পবিস্তর' লিখতাম। এখানে এসেও বিস্তর না লিখলেও মোটামুটি লিখছি। তবে মর্তে রাজনীতির যে বাড়বাড়ন্ত হয়েছে তাতে লেখকদের খোরাক ও খোরাকি দুইই জুটছে। তোমাদের সঞ্জীব চট্টোপাধ্যায়, তারাপদ রায়ের নামের সঙ্গে আমি খুব পরিচিত। সত্যিই এদের লেখার ধার আছে। সঞ্জীবকে তো কেউ কেউ আমার সঙ্গে তুলনা করে। কাজটা ঠিক করে না। আমি মনে প্রাণে বিশ্বাস করি, সে আমাকেও ছাপিয়ে যাবে। তবে দেশে সমালোচকদের অভাব নেই। তাই কার ঘাড়ে কখন যে কোপ পড়বে কেউ বলতে পারে না। এই আমাদের সর্বজন শ্রদ্ধেয় রবিবাবুরই হাল দেখো না। এতদিন পরে কে এক খুশবন্ত সিং রবিবাবুর লেখা পড়ে মোটেই খুশী নন। সিং বাগিয়ে তেড়ে এসেছেন। তার মতে তিনি একজন অতি সাধারণ লোক। একজন নোবেল বিজয়ী লেখক, যাঁর লেখা দেশে বিদেশে সমাদৃত, তাকে সাধারণ বলে আখ্যা দেওয়া অসাধারণ সাহসের পরিচয় নয় কি?

লেখক: ছেড়ে দিন খুশবন্ত সিং এর কথা। আপনার কথা বলুন। এখন কি লিখছেন তাই বলুন।

শি:চ: ছাড়া যায় না হে। গুরুর প্রতি গুরুতর অভিযোগ যার সর্বৈব মিথ্যা, তাকে মেনে নেওয়া মানে গুরুর প্রতি অসম্মান করা। যাই হোক তুমি যখন সে প্রসঙ্গ পালটাতে চাইছো, তখন বাদ দাও সিং এর ব্যাখ্যান। হ্যাঁ তুমি কি জানতে চাইছিলে? এখন কি লিখছি। আসলে, মর্তে অনেকদিন ছিলাম তো তাই বর্তমানে মর্তের কড়চা লিখি। সেদিন বিকালে একটু ভ্রমণ করছিলাম। এমন সময় যমরাজের সাথে দেখা। আমি যমরাজকে কথায় কথায় বললাম, 'আচ্ছা ভাই যম, মর্তে তোমার যে যমজ ভাই আছে তার সম্পর্কে কিছু বল তো'। প্রশ্নটা শুনে যম একটু ভ্যাবাচাকা খেয়ে গেল। 'আমার যমজ ভাই, তাও মর্তে? ভুল করছেন না তো শিবরাম বাবু!'

না না ভুল আমার হয় না। মর্তবাসীরা তো কলকাতার মিনিবাসগুলোকে মূর্তিমান যমই বলে। নিজের অজ্ঞতার কথা ফাঁস হয়ে যাওয়াতে যমরাজ বড়ই লজ্জিত হয়ে পড়েন। আমার হাতদুটোকে ধরে অনুনয়ের সুরে বলেন, 'শিবরাম বাবু, আপনি আমার ভাই এর সম্পর্কে আরো তথ্য দিন, আমি শুনতে চাই।' লেখকরা বড় উপকারী জীব, বড়ই জীবন্ত। আর সেই জন্যই আপনাদের মত লোকজন আরো বেশী সংখ্যায় এখানে আনা প্রয়োজন। পি. আর. ওর কাজটা আপনাদের মতন লোকদের দিয়ে ভালোই চলে যাবে।

লেখক: তা হলে যমের কথা শুনে মনে হচ্ছে স্বর্গ আপনাদের টানছে। সেই কারণেই এই কিছুদিন আগে বেশ কয়েকজন বাঘা বাঘা সাহিত্যিককে পর পর টেনে নিয়ে গেল।

শি: চ: টান থাকবে না? নদীর যেমন টান থাকে সাগরের দিকে, মর্তের তেমনি টান থাকে স্বর্গের দিকে। বলতে পারো সম্পর্কের মধ্যে একটা টান টান ভাব আছে। অবশ্য, আমার মতে টানটা একটু কমানো দরকার। নতুবা মর্তের লোকদের বড়ই অসুবিধার সম্মুখীন হতে হবে। ভাল ভাল লোকগুলো সবাই যদি এখানে এসে ঠাঁই পায় তবে মর্তবাসীদের মর্তে বাস করাই দুষ্কর হয়ে উঠবে।আর কয়েকদিন পরেই পুজো। তোমরা ওখানে হৈ হল্লোড় কর, আর আমরা এখানে একা একা ঘুরে বেড়াই। দেবদেবীরা প্রায় সবাই চলে যান মর্তে। ফিরে এসে সকলেরই অনুযোগ। ভাবছি, এবার পুজোতে এসব নিয়েই লিখবো। দেখা যাক কতটা কি করতে পারি।

লেখক: আমরা আশা করে থাকবো কিন্তু তার উত্তরে একটা মজার জবাব দিয়েছিলেন, সেটা এখন আর মনে পড়ছে না।

-অরুণ গুপ্ত, কলিকাতা